XII Hindi Pre-board. 10/12/12.
12 A (8)

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, एरणाकुलम संभाग

प्रथम बोर्ड पूर्व परीक्षा ,वर्ष 2012-13

कक्षा : बारहवीं | अधिकतम अंक: 100

विषय: हिन्दी (केन्द्रिक) | समय : 3 घंटे

निर्देश : इस प्रश्न पत्र में क, ख और ग तीन खण्ड हैं।

सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

उत्तर लिखने से पहले प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड क

1 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **1×5=5**

शांति नहीं तव तक, जव तक
सुख-भाग न सवका सम हो।
नहीं किसी को वहुत अधिक हो।
नहीं किसी को कम हो।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
भोलो धर्मराज, शोषित वे
जियें या कि मिट जाएँ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले ,तो लड़के
तेजस्वी छीनते समर को,
जीत या कि खुद मरके।
किसने कहा पाप है समुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित-लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना?

क) शांति के लिए क्या आवश्यक है?

ख) कौन-सा युद्ध निष्पाप है?

ग) धर्मराज से क्या प्रश्न पूछा गया है?

घ) तेजस्वी लोगों की क्या पहचान है?

ङ) काव्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

2 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के जवाब दीजिए

भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा अजर,अमर,चैतन्य एवं आनंद स्वरूप है,पर अविद्या एवं अज्ञानता के कारण मनुष्यअपने को अशक्त असहाय एवं दु:खी समझता है। इसलिए इस बहुमूल्य जीवन को उल्लास एवं उत्साहपूर्वक सफल बनाने के स्थान पर वह हर समय निराश,आलस्य,जड़ता एवं विषाद से ग्रस्त रहता है।उत्साहहीनता के कारण वह कर्म न करने के अनेक बहाने ढूँढता है।जैसे अब बहुत देर हो गई है,अभी जल्दी है,बहुत ठंड है,बड़ी गर्मी है,बहुत भूख लगी है,पहले खाऊँगा या बहुत खा लिया है,पहले आराम करूँगा आदि।भगवान बुद्ध कहते हैं- 'आलसी व्यक्ति जो करना है वह बिना किए ही रहता है।वह नया अर्जित नहीं कर सकता और जो अर्जित करता है वह भी नष्ट कर देता है।' गीता के अनुसार सात्विक व्यक्ति उत्साह से पूर्ण होता है तथा आसक्ति एवं अहंकार रहित होकर,फल की कामना या सिद्धि अथवा असिद्धि की परवाह न करते हुए शुभ कार्यो में लगा रहता है।जहाँ उत्साहहीनता से सौभाग्य भी रूठ जाता है वहीं उत्साही व्यक्ति के शत्रु भी उसके अनुयायी बन जाते हैं। उत्साहवान पुरुष किसी कार्य में असफल नहीं रहते।उत्साह ही जीवन है,निरुत्साहिता ही मृत्यू है।उत्साहपूर्ण व्यक्ति स्वयं प्रगति करता है तथा दूसरों की प्रगति में भी सहायक होता है।प्रकृति की ओर देखें कि उषा की पहली किरण के साथ ही पक्षी निद्रा छोड़कर उत्साहपूर्वक आकाश में उड़ते हैं और चहकते हुए भोजन ढूँढते हैं।चींटी अपने से अधिक भार का दाना लिए हुए उत्साहपूर्वक पंक्तिबद्ध होकर अपने बिलों की ओर जाती है।उत्साह में प्रवाह है; गति है एवं विद्युत शक्ति है,मनुष्य को चाहिए कि अपने नकारात्मक विचार त्याग दे और उत्साहपूर्वक शुभकर्मो में प्रवृत्त रहे।सुखी जीवन की कुँजी उत्साह का आश्रय हैं उत्साह,लगन,साहस और परिश्रम से अनहोनी को भी होने में बदला जा सकता है,उत्साह में असीम ऊर्जा है।

क) सात्विक व्यक्ति के क्या लक्षण है? 2

ख) हतोत्साहित व्यक्ति को क्या-क्या हानि उठानी पड़ती है? 2

ग) प्रकृति से हमें क्या शिक्षा मिलती है? 2

घ) सुखी जीवन की कुंजी क्या है? 2

ङ) मनुष्य अपने को दुखी क्यों समझता है? 2

च) भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा का स्वरूप कैसा है? 1

छ) व्यक्ति का सौभाग्य उससे कब रूठ जाता है? 1

ज) विलोम शब्द लिखिए- नकारात्मक , आसक्ति 1

झ) उपसर्ग, मूल शब्द एवं प्रत्यय को अलग कीजिए- अज्ञानता, भारतीय 1

ञ) उपर्युक्त अवतरण के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

शांतिक

खण्ड ख

3 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबंध लिखिए- 1×5=5

क) सर्वशिक्षा अभियान

ख) मीडिया का सामाजिक दायित्व

ग) स्वच्छ पर्यावरण- जीवन का आधार

घ) नर हो न निराश करो मन को

4 समाज में बढ़ती हुई असुरक्षा के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए नवभारत टाइम्स के संपादक को एक पत्र लिखिए। 1×5=5

अथवा

अपने मोहल्ले में दिन-प्रतिदिन बढ़ते विजली संकट को लेकर विद्युत वोर्ड के मुख्य अभियंता को एक पत्र लिखिए।

5 (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए- 1×5=5

क) छापाखाने का आविष्कार किसने किया?

ख) समाचार के संदर्भ में छः ककार कौन से हैं?

ग) फ्री लांसर पत्रकार किसे कहते हैं?

घ) पी.टी.आई का विस्तृत रूप लिखिए?

ङ) पीत पत्रकारिता से क्या आशय है?

(आ) 'महँगाई के बढ़ते चरण' पर एक आलेख तैयार कीजिए। 1×5=5

अथवा

'भारतीय क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर का योगदान'-पर एक आलेख तैयार कीजिए।

6 किसी एक विषय पर फीचर लिखिए- 1×5=5

क) शिक्षा का बदलता चेहरा

ख) किसी पर्वतीय इलाके की सैर

खण्ड ग

7 निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और किसी एक पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 4×2=8

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में